# निबन्ध~ भ्रष्टाचार : कारण और निवारण

प्रस्तावना :—

भ्रष्टाचार' शब्द दो शब्दों 'भ्रष्ट' और 'आचार' को जोड़कर बना है। भ्रष्ट का अर्थ है— अपने स्थान से विचालित अथवा गिरा हुआ। 'आचार' का अर्थ है— आचरण या व्यवहार। इस प्रकार किसी व्यक्ति के द्वारा अपनी गरिमा से गिरकर किया कार्य भ्रष्टाचार है।

भ्रष्टाचार के विविध रूप —

वर्तमान में भ्रष्टाचार की जड़ें व्यापक रूप से फैली हैं। इसके विविध रूप कुछ इस प्रकार देखने को मिलते हैं—

(1) रिश्वत — (सुविधा शुल्क) / कार्य कराने के लिए शीघ्रता के कारण / सरेशानी न हो / नियम विरुद्ध कार्य कराने हेतु।

(2) भाई-भतीजावाद —
- सगे सम्बन्धी सुविधा पाएँ।
- सगे सम्बन्धी लाभान्वित हों।

(3) कमीशन —
- सुविधा प्रदाता द्वारा प्रतिशत (कुछ) लेना।
- सरकारी / अर्द्ध सरकारी / ठेकों- कार्य में कमीशन बाजी।

(4) यौन शोषण :—
- भ्रष्टाचार का नवीन रूप
- लाभ पहुँचाने के बदले यौनशोषण
- मजबूरी का फायदा उठाकर /

## भ्रष्टाचार के कारण —

इस प्रकार हैं —

(1) मँहगी शिक्षा —

- शिक्षा का व्यवसायी करण हो गया
- युवा अधिक खर्च कर उच्च पद पर पहुँचकर भ्रष्टाचार करता है।

(2) लाचार न्याय व्यवस्था : —

- अमीर धन-बल से साफ बच जाते हैं।

(3) जन जागरण का अभाव : —

- लोगों में जागरूकता की कमी

(4) चारित्रिक पतन व जीवन मूल्यों का ह्रास —

- धन के आगे सब बेकार।

## भ्रष्टाचार का निवारण : —

(1) जनान्दोलन —

(2) कठोर कानून —

(3) निःशुल्क उच्च शिक्षा —

(4) पारदर्शिता —

(5) कार्यस्थल पर व्यक्ति की सुरक्षा व संरक्षण —

(6) नैतिक मूल्यों की स्थापना —

उपसंहार